पूरी तरह उच्छश्रृंखल होकर संजय ने मयार को पकड़ा और पीटने लगा। कोई भावना–दुर्भावना प्रबलतम हो जाए तो मनुष्य की फितरत में अतिरंजना आ जाती है। मयार स्तब्ध। संजय ने क्रूर होकर उसे कभी नहीं मारा था। तुहिना भावुक–सरल लड़की। मयार को संजय की पकड़ से खींचने लगी ''मयार को छोड़ो पापा। मुझे पता होता आप भी मेरे पापा की तरह गंदे हो, मैं आपको पापा नहीं बनाती। बस मयार को अपना भाई बना लेती।''

है। तुहिना दखल की तरह लगने लगी है। तुहिना को सताने के मौके ढूंढने लगा है। नारायणी के विद्यालय की प्राचार्य अस्पताल में भर्ती थी। नारायणी अन्य शिक्षकों के साथ उन्हें देखने अस्पताल चली गई। संजय बच्चों को होमवर्क करने के लिए कह टी.वी. देखने लगा। प्यास लगी और दोनों की गतिविधि देखने आ गया। तुहिना एकाग्र होकर गृहकार्य कर रही थी। मयार खिड़की से बाहर ताक-झांक कर रहा था। संजय ने तुहिना को दखल दिया-

''तुहिना, पानी पिलाओ।''

तुहिना एकाग्र थी ''मयार, पापा को पानी पिला दो। मैं यह आन्सर पूरा कर लूं।''

संजय ने तेज आवाज में कहा ''तुहिना, मैंने तुमसे कहा है।''

''पापा, वन मिनिट। मेरा कन्सनट्रेशन बिगड़ रहा है।''

''मैं लाता हूं न।'' मयार रसोई में जाने लगा।

''मैंने तुहिना से कहा है।''

''तुहिना को टीज करते हो।''

तुहिना का शागिर्द हर बात में कहता है तुहिना को टीज करते हो।

''तुम्हें करता हूं।''

पूरी तरह उच्छश्रृंखल होकर संजय ने मयार को पकड़ा और पीटने लगा। कोई भावना-दुर्भावना प्रबलतम हो जाए तो मनुष्य की फितरत में अतिरंजना आ जाती है। मयार स्तब्ध। संजय ने क्रूर होकर उसे कभी नहीं मारा था। तुहिना भावुक-सरल लड़की। मयार को संजय की पकड़ से खींचने लगी ''मयार को छोड़ो पापा। मुझे पता होता आप भी मेरे पापा की तरह गंदे हो, मैं आपको पापा नहीं बनाती। बस मयार को अपना भाई बना लेती।''

ललकार रही थी छंटाक भर की लड़की।

तुहिना के आरोप ने संजय को वहशी बना दिया। मयार को छोड़ उसे मारने लगा। आज नहीं तो कभी नहीं। इस लड़की को बर्दाश्त करना नामुमकिन है।

''पापा, मुझे मारो। तुहिना को क्यों मारते हो?''

मयार की आपत्ति ने संजय को विवेक शून्य कर दिया। उसकी पकड़ से किसी तरह छूटकर रोती-बिलखती तुहिना अपने कमरे में चले गई। मयार झपट कर उसके पीछे गया और कमरा भीतर से बोल्ट कर लिया। संजय हांफता खड़ा रहा फिर शयन कक्ष में आ गया। टी.वी. बंद कर बिस्तर में धसक कर हांफता रहा। ...नारायणी के लौटने पर चेत आया उसने क्या क्रूरता की है। नारायणी की आहट पाकर मयार और तुहिना कमरे से बाहर निकले। तुहिना, नारायणी से लिपट गई। कंठ में हिचकियां-

''मम्मी, पापा ने मुझे और मयार को बहुत मारा। उनको बोलो अपने घर वापस जाएं। यहां मैं, तुम और मयार रहेंगे।''

मयार, अपराधी की तरह सिकुड़ा हुआ ''पापा ने बहुत मारा।''

''बेटी, तुम्हें तो तेज बुखार है।''

नारायणी का दिल भर आया। रत्नाकर, तुहिना को मारता था तब नारायणी बीच में आ जाती थी- मुझसे बात करो। बच्ची को क्यों मारते हो? आज चीख न सकी- संजय जी मुझसे बात करें। बच्ची को क्यों सताते हैं। शिद्दत से लगा वे कानूनी तौर पर पति-पत्नी बन गए हैं लेकिन भिन्न स्थिति भिन्न ही रहती है। खासकर तब, जब दूसरा पक्ष निष्ठा और ईमानदारी पेश न करे। विश्वास, अधिकार, उम्मीद जैसे भाव दृढ़ नहीं हो पाते। अस्वीकार, असुरक्षा, अनिश्चय, भंगुरता जैसा संशय बना रहता है। चीजें आसान हों इसलिए नारायणी ने सदा अनुनय बनाए रखी है। इस वक्त जानने की कोई कोशिश नहीं की संजय कहां है। बेड रूम में छिपा पड़ा होगा। मयार ने आग्रह किया-

''मम्मी, तुम हम दोनों को हॉस्टल भेज दो।''

दस और ग्यारह की उम्र। आज हुए ध्वंस ने इन्हें इतना बड़ा बना दिया कि छात्रावास जैसे विकल्प का विचार कर लिया। नारायणी, बच्चों के साथ उनके कमरे में देर तक रही फिर खाना बनाने लगी। दोनों को थोड़ा-बहुत कुछ खिलाकर शयन कक्ष में आई। वातावरण की निरंतर टोह लेता संजय आंखों पर बांह रखकर लेटा हुआ था। नारायणी बिछावन के दूसरे छोर पर संजय से दूरी बना कर बैठ गई। संजय की रीढ़ में सिहरन। बड़ी बेवकूफी हो गई। नारायणी पता नहीं क्या उग्रता दिखाएगी। स्त्री बहुत कुछ सह लेती हैं, संतान का दर्द नहीं सह पाती। क्योंकि वह